



क.रा.बी.नि.
ESIC

आरोहण

विभागीय हिंदी पत्रिका

वर्ष 2023-24, अंक-6



कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

मानेसर, हरियाणा

भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न,
समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त करने के लिए,

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और

राष्ट्र की एकता और अखंडता

सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज
तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला
सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा
इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और
आत्मार्पित करते हैं।



आरोहण

अंक-6, वर्ष: 2023-24

संरक्षक

डॉ. श्रुति विरमानी, चिकित्सा अधीक्षक

प्रधान संपादक

श्री प्रियरंजन झा, सहायक निदेशक(रा.भा.प्रभारी)

संपादक

श्री राकेश कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक : राजभाषा शाखा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, प्लॉट सं.41, सेक्टर-03,
आई.एम.टी. मानेसर - 122050 (गुरुग्राम)

अस्वीकरण : 'पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित लेखक का है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।'

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	वरिष्ठ अधिकारी, मुख्यालय	5-8
2.	संरक्षक की कलम से	डॉ. श्रुति विरमानी, चिकित्सा अधीक्षक	9
3.	संपादकीय	श्री प्रियरंजन झा, सहायक निदेशक (रा.भा. प्रभारी)	10
4.	प्यार में थोड़ा कच्चा हूं	श्री मुकेश कुमार शर्मा	11
5.	आओ, प्रकृति की गोद में खो जाते हैं	श्री विरेंद्र तेतरवाल	12
6.	खता खुदा की नहीं	श्री विरेंद्र तेतरवाल	13
7.	ज्यामिति और वासुतकला में संबंध	श्री मुकेश कुमार शर्मा	14
8.	अंग्रेजी का सरदर्द	कु. अहाना आनंद	15
9.	ना हो तू निराश	श्री देवराज प्रजापति	16
10.	आधुनिक सच	श्री मुकेश कुमार सैनी	17-19
11.	योग	श्रीमती राजबाला	20-21
12.	चिट्ठी की महिमा	श्री मुकेश कुमार सैनी	22-24
13.	फोटो गैलरी	राजभाषा शाखा	25-28
14.	स्वास्थ्य पर कविता	श्री सीमास कुमार	29
15.	डॉक्टर असली वॉरियर्स	श्री मुनीष शर्मा	30
16.	आईपी की कलम से	श्री विनीत कुमार	31
17.	औरत हूं मैं	श्रीमती राजबाला	32
18.	उक्त रक्तचाप हेतु घरेलू उपाय	श्री मनोज कुमार	33-34
19.	नारी तेरे कितने रूप	श्रीमती वंदना	35-36
20.	राजभाषा गतिविधियां	राजभाषा शाखा	37
21.	सांविधिक प्रावधान	राजभाषा शाखा	38
22.	धारा 3(3)	राजभाषा शाखा	39
23.	मंगल पांडेय	श्री रवि कुमार	40-42
24.	जलियांवाला के प्रतिशोधी ऊधमसिंह	श्री हिंमांशु जांगिड	43-44
25.	इच्छा कभी पूरी नहीं होती	श्री राकेश कुमार	45-46
26.	सती अनुसुईया	श्रीमती वंदना	47-48
27.	दो सहेलियां	श्री सागर	49
28.	हंसगुल्ले	श्री रवि कुमार	50



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संख्या:ए-49/17/1/2016-रा.भ्र
दिनांक: 27.02.2023



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, मानेसर अपनी गृह पत्रिका "आरोहण" के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। गृह पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है और राजभाषा के प्रति संवैधानिक कर्तव्यों का पूरी सजगता से अनुपालन का प्रतीक है। आशा है कि गत अंकों की भांति यह अंक भी राजभाषा की प्रगति में एक सराहनीय कदम साबित होगा।

पत्रिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

राजेन्द्र कुमार

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

डॉ. श्रुति विरमानी
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी. निगम अस्पताल
मानेसर(हरियाणा)।



क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

टी.एल. यादेन
वित्त आयुक्त



सं. ए-49/17/2/2016-रा.भा.
दिनांक : 09.02.2023

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, मानेसर अपनी हिंदी पत्रिका 'आरोहण' के 6वें अंक का प्रकाशन कर रहा है जो कि बहुत ही प्रशंसनीय है। यह मानेसर अस्पताल के कर्मिकों के राजभाषा के प्रति सम्मान और समर्पण को प्रदर्शित करता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह गृह पत्रिका उत्प्रेरक ज्ञान-वृद्धि का काम करेगी। आशा है यह अंक राजभाषा के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

टी एल यादेन

(टी. एल. यादेन)

डॉ. श्रुति विरमानी
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी. निगम अस्पताल
मानेसर (हरियाणा)।



क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. दीपिका गोविल
चिकित्सा आयुक्त

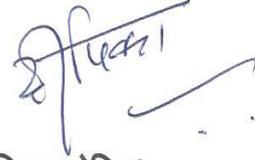


सं. ए-49/17/3/2016-रा.भा.

दिनांक: 13.02.2023.

संदेश

मुझे जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, मानेसर अपनी विभागीय हिंदी पत्रिका 'आरोहण' के 6वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका के संपादक मंडल एवं अस्पताल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं। निगम अस्पतालों में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे सार्थक प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय हैं। आशा करती हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के लिए जानवर्धक सिद्ध होगा।



(दीपिका गोविल)

डॉ. श्रुति विरमानी
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी. निगम अस्पताल
मानेसर(हरियाणा)



क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



सर्वमेव जते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

दीपक जोशी
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

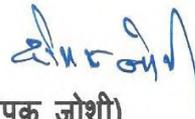


संख्या:ए-49/17/03/2016-रा.भा.
दिनांक: 07.02.2023

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, मानेसर अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'आरोहण' के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है, यह राजभाषा के क्षेत्र में एक सार्थक प्रयास है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करना राजभाषा कार्यान्वयन को एक प्रकार से बढ़ावा देना ही है। साथ ही इससे अस्पताल कर्मिकों का राजभाषा के प्रति स्नेह और उनकी साहित्य के प्रति अभिरुचि का परिचय प्राप्त होता है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।


(दीपक जोशी)

डॉ. श्रुति विरमानी
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी. निगम अस्पताल
मानेसर(हरियाणा)

संरक्षक की कलम से.....



राजभाषा कार्यान्वयन एक सांविधिक व्यवस्था है तथा इसका अनुपालन हमारे लिए आवश्यक है। हमें चाहिए कि राजभाषा के प्रचार-प्रचार में कोई कसर न छोड़ें। अपने दैनिक कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। हिंदी हमारी राजभाषा है और यह हमारी एकता और अखंडता की प्रतीक है। जैसे हम अपने परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यबद्ध होते हैं वैसे ही हमें देश और संविधान के प्रति भी प्रतिबद्ध होना चाहिए। हिंदी मात्र समारोहों व आयोजनों की भाषा ही बनकर न रहे अपितु उसे प्रयोग करने की दिशा में भी सभी स्तरों पर सतत प्रयास हों।

किसी भी कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष स्थान है। मौलिक लेखन द्वारा नए रचनाकारों को भी उभरने का अवसर मिलता है। आशा है कि यह पत्रिका इस दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में अपने सांविधिक दायित्वों का निरंतर निर्वहन करने में सहायक सिद्ध होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि यह अंक इसके समस्त रचनाकारों के विचारों एवं अभिव्यक्ति को सरलतापूर्वक एवं रोचक ढंग से उजागर करने में सफल होगा।

आज समस्त विश्व भारत की ओर आशा से देख रहा है चाहे वह चिकित्सा क्षेत्र हो या शिक्षा का अथवा उद्योग का या फिर विज्ञान का ही क्यों न हो। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी भारत उभर रहा है। विश्व पटल पर आज भारत की बात बड़े गौर से सुनी जाती है।

मैं “आरोहण” के सभी लेखकों को मैं हार्दिक शुभकामनाएं भेंट करती हूँ तथा आशा करती हूँ कि इसका आगामी अंक भी इसी प्रकार से रोचक व जानकारियों से भरा हो। पत्रिका से जुड़े हुए संपादक मंडल एवं लेखकों को पुनः बहुत बहुत बधाई व अभिनंदन।

डॉ. श्रुति विरमानी
चिकित्सा अधीक्षक

प्रधान संपादक की कलम से.....



मनोरंजक, आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री लिए हुए “आरोहण” का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत ही खुशी हो रही है। इस अंक में लेखकों ने अपनी लेखन प्रतिभा एवं सृजनात्मकता द्वारा अपनी छाप छोड़ी है। यह हम सबके परिश्रम का ही फल है कि इस अंक में जहाँ एक ओर इस अस्पताल में हो रही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति की बात है, वहीं दूसरी ओर बहुत सी ज्ञानवर्धक बातें भी हैं।

इस अस्पताल के कार्मिक बड़ी संख्या में राजभाषा संबंधी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। हिंदी प्रतियोगिताओं व हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन, हिंदी कार्यशाला व अन्य गतिविधियाँ सुचारु रूप से कार्यान्वित की जा रही हैं।

आज अनुवाद संबंधी सॉफ्टवेयर आज बहुतायत में उपलब्ध हैं जो हमारा हिंदी में कार्य करना आसान बनाते हैं। राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि इन टूल्स की सहायता से हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। लीला इसी दिशा में किया गया एक सार्थक प्रयास है। आज हम इंटरनेट पर उपलब्ध गूगल ई-टूल्स की सहायता से अपना दैनिक कार्य हिंदी में आसानी से कर सकते हैं।

इस अंक के सभी लेखकों को धन्यवाद देते हुए पाठकों से सुझाव भी आमंत्रित हैं ताकि आगामी अंकों को भी इसी तरह मनोरंजक, सरल व सुपाठ्य बनाया जा सके। पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों व संपादक-मंडल को बधाई।

प्रिय रंजन झा

सहायक निदेशक (रा.भा. प्रभारी)

प्यार में थोड़ा कच्चा हूँ.....



प्यार में थोड़ा कच्चा हूँ
पर दिल का बहुत अच्छा हूँ
किसी का बुरा नहीं सोचता हूँ
ना किसी से बैर रखता हूँ।

बोली का थोड़ा कड़वा हूँ
क्योंकि मैं सच्चा हूँ
पीठ पीछे कुछ नहीं कहता हूँ
बस सच का आईना साथ लिए चलता हूँ।

सब रिश्तो को निभाता हूँ
थोड़ी गलती भी करता हूँ
जो अपने हैं, वो समझते हैं
जो नहीं समझते, उन्हें गैर मान लेता हूँ।

जो पसंद है, वो दिल से करता हूँ
जो पसंद नहीं, वो करना नहीं चाहता हूँ
अगर मजबूरी में करना पड़ जाए
तो सब गलत कर देता हूँ।
कभी चुप रह जाता हूँ
कभी खुद के लिए लड़ता हूँ
चापलूसी मुझे आती नहीं
इसलिय कुछ लोगों को खटकता हूँ।

जिदंगी कुछ इस तरह जीता हूँ
ना ज्यादा खुश रहता ना गम में घुला रहता हूँ
लोग डर जाते हैं मौत से अक्सर
मैं मौत से भी नहीं डरता हूँ ॥

मुकेश कुमार शर्मा
नर्सिंग अर्दली

हिंदी बोलचाल की महान भाषा है - जर्ज ग्रियर्सन

आओ, प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

काली हवाओं के बादल से,
जल की दूषित चादर से,
धरती के होते निराकर से,
मिलकर हम सब लड़ते हैं,
आओ प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

बड़ों के प्रयासों से,
बच्चों के जोश और ताकत से,
अच्छे पर्यावरण की रचना से,
धरती को सजाते हैं,
आओ प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

पेड़ों की हरियाली से,
सूर्य की लाली से,
खेतों के लहराने से,

पक्षियों के चहचहाने से,
जीवन की खुशहाली को बढ़ाते हैं,
आओ प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

पहाड़ों की ऊँचाइयों से,
नदियों की गहराइयों से,
बादलों के गडगडाने से,
हवाओं के सरसराने से,
वर्षा की बूंदों के संग गाते हैं।
आओ प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

जीवन के उद्देश्य को,
पीढ़ियों के भविष्य को
धरती माँ के अस्तित्व को,
मिलकर हम बचाते हैं;
आओ प्रकृति की गोद में खो जाते हैं।

हिंदी उन सभी गुणों से अंलकृत है, जिनके बल पर
वह विश्व की साहित्यिक भाषा की
अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है - मैथिलीशरण गुप्त

वीरेन्द्र तेतरवाल
नर्सिंग अधिकारी

खता खुदा की नहीं

दिल का दर्द अंखियों से छलकने लगा
ना चाह कर भी एक सवाल जुबां तक आने लगा
पूछ बैठे उस खुदा से आखिर
क्यों तू अपने ही बंदों को यूं सताने लगा
खुदा के भी न जाने जेहन में क्या आया
मुस्कुरा कर उसने कुछ ऐसा फरमाया
राह में तेरी थे अवसर हज़ार
पर तू चलता गया बंद अंखियों से हर बार
ना दिखा तुझे वो सुबह का सवेरा
ना नज़र आया कोई पल सुनहरा
ना जाने किस धुन में तू चलता गया
ठोकर जब लगी तो इल्जाम ये मुझे देता गया
खता खुदा की नहीं एहसास जब ये हुआ
पानी का इक कतरा इन अशकों से बह गया
जिंदगी का उसूल निराला मालूम तब हुआ
और फिर एक मासूम दुनिया की भीड़ में खो गया ।

वीरेन्द्र तेतरवाल
नर्सिंग अधिकारी

ज्यामिति और वास्तुकला में संबंध



जैसा कि हम जानते हैं कि ज्यामिति गणित की एक शाखा है जिसमें रेखा, कोण, आकार - जैसे- वृत्त, त्रिभुज, आयत, वर्ग और कई अन्य आकारों की चर्चा करते हैं।

बहुत सारी ज्यामितिय आकृति प्रकृति में देखी जा सकती हैं। उदाहरण स्वरूप मधुमक्खी में षट्भुज को, स्टार मछली में स्टार को, अण्डाकार आकृति सूरज, चाँद और पृथ्वी में इत्यादि ।

ज्यामिति दो प्रकार की होती है - समतल और स्थानिक

समतल ज्यामिति का उपयोग समतल सतह के लिए होता है जाकि स्थानिक ज्यामिति का उपयोग किसी वस्तु की गहराई मापने के लिए किया जाता है उदाहरण:- वृत्त, सिलेंडर, एवम् प्रिज्म इत्यादि

ज्यामिति का उपयोग वास्तुकला में ईमारत बनाने में, बाँध बनाने में, सड़क, मंदिर इत्यादि आदि बनाने में किया जाता है। दैनिक जीवन में ज्यामिति का उपयोग का सर्वोत्तम उदाहरण हमें अपने घर की के सीढ़ियाँ, जो घरों में ज्यामिति के त्रिभुज कोणों के आधार स्वरूप 90 डिग्री पर की जाती है। दिल्ली स्थित लोटस टेम्पल में भी ज्यामिति का इस्तेमाल देखने को मिलता है।

पंखुड़ियों की तरह दिखने वाले पत्तियों के आकार में तीन पंक्तियों में - प्रवेश पत्र (द्वारा) बाहरी पन्ने एवं भीतरी पते जो आंशिक रूप से खुली हुई कली का आभास देता है।

इसी तरह पैराबोलिक मेहराब (आर्च) का उपयोग कई ऊर्ध्वाकार (वर्टिकल) स्तंभों के साथ एक पुल के निर्माण के लिए किया जाता है। उसका उदाहरण सिडनी हार्बर ब्रिज है।

प्राचीन ग्रीस, भारत एवं अन्य इस्लामिक देशों में, पिरामिड, मंदिर, मस्जिदों, महल, मठ एवम् इमारतों के बनाने एवं ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न का उपयोग किया जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि ज्यामिति का हमारे जीवन में बहुत ही उपयोग और महत्व है। इसके बिना हम अच्छी वास्तुकला की कल्पना भी नहीं कर सकते ।

मुकेश कुमार शर्मा
नर्सिंग अर्दली

अंग्रेजी का सिरदर्द
(सी का चक्कर)



एक समय की बात है। एक गाँव में एक नई नवेली दुल्हन को अंग्रेजी भाषा सीखने का शौक हुआ और वह अंग्रेजी सीखना शुरू कर दी। ए, बी से शुरू होकर वह 'सी' अक्षर पर अटक गई क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि 'सी' को कभी 'च' कभी 'क' तथा कभी 'स' क्यों कहते हैं? एक दिन वह अपने पति से बोली, "क्या आपको पता है, चलचत्ता के चुली भी चिचेट खेलते हैं। उसके पति ने उसे समझाया, यहाँ 'सी' को 'च' नहीं 'क' बोलते हैं। यानि कलकत्ता के कुली भी क्रिकेट खेलते हैं। पत्नी ने फि पूछा - "वह कुन्नी लाल कोपड़ा तो केयरमैन हैं न ? पति ने समझाया - यहाँ 'सी' को 'च' बोलते हैं - चुन्नीलाला चोपड़ा तो चेयरमैन है ना ।

थोड़ी देर बाद पत्नी बोली, "आपका चोट चैप दोनों चाटन के हैं।" पति तेज आवाज में डाँटते हुए बोला- तुम समझती क्यों नहीं, यहाँ 'सी' को 'क' बोलते हैं। आपका कोट, कैप कॉटन के हैं। पत्नी फिर बोली - "कंडीगढ़ में कंबल किनारे कर्क है। पति को गुस्सा आ गया और बोला बेवकुफ यहाँ 'सी' को 'च' बोलते हैं - चंडीगढ़ में चंबल किनारे चर्च है। पत्नी डरते हुए धीरे से बोली, "चरंट लगने से चंडक्टर और चलर्क दोनो मर गए। पति सिर पीटते हुए बोला- यहाँ 'सी' को 'क' बोला जाएगा। करंट लगने से कंडक्टर और क्लर्क दोनों मर गए। पत्नी बोली इस 'सी' से मेरा अब सिर दर्द होने लग गया है, अब मैं चेक खाकर चाफी के साथ चैप्सूल खाकर सोने की जा रही हूँ। जाते - जाते पति बड़बड़ाया- तुम केक खाओ पर मेरा सिर न खाओ, पानी पियो पर मेरा खून न पीयो, तुम कैप्सूल निगलो पर मेरा चैन न निगलो।

अहाना आनंद
(पुत्री डॉ. आनंद)

ना हो तू निराश.....



मत हारकर बैठ, ना हो तू निराश,
भोर होगी एक दिन, अँधेरा हटेगा, भाग्योदय होगा तेरा भी,
करता रह निरंतर तू प्रयास
क्या हुआ यदि हार से तेरी दोस्ती पक्की है,
जब मैं हारा तो ही जीतने वाला लक्की है।
मत हारकर बैठ, ना हो तू निराश,
ओर होगी एक दिन, अँधेरा हटेगा, भाग्योदय होगा तेरा भी,
करता रह निरंतर तू प्रयास
मत हार मान, उठ खड़ा हो दौड़, मंजिले और भी है।
यह आखिरी संग्राम नहीं है इम्तिहान अभी और भी है
मत हारकर बैठ, ना हो तू निराश,
भोर होगी एक दिन, अँधेरा हटेगा, भाग्योदय होगा तेरा भी,
करता रह निरंतर तू प्रयास
क्या हुआ जो हर बार ही तू ठुकराया हर बार ही हारा,
वह खेल अलग था तू प्रतियोगी दूसरा मत समझ खुद को बेसहारा ।

देवराज
वरिष्ठ भेषजज्ञ

आधुनिक सच



पति पत्नी दोनों खूब कमाते हैं
तीस लाख का पैकेज दोनों ही पाते हैं
सुबह आठ बजे नौकरियों पर जाते हैं
रात ग्यारह तक ही वापस आते हैं

अपने परिवारिक रिश्तों से कतराते हैं
अकेले रह कर वह अपना करियर बनाते हैं
कोई कुछ माँग न ले वो मुंह छुपाते हैं
भीड़ में रह कर भी अकेले रह जाते हैं

मोटे वेतन की नौकरी छोड नहीं पाते हैं
अपने नन्हें मुन्ने को पाल नहीं पाते हैं
फुल टाइम की मेड ऐजेंसी से लाते हैं
उसी के जिम्मे वो बच्चा छोड़ जाते हैं

परिवार को उनका बच्चा नहीं जानता है
केवल आया अंटी को ही पहचानता है
दादा-दादी नाना-नानी कौन होते हैं?
अनजान है सबसे किसी को मानता है

आया ही नहलाती आया ही खिलाती है
टिफिन भी रोज रोज आया ही बनाती है
यूनिफॉर्म पहना के रोज स्कूल कैब में बिठाती है
छुट्टी के बाद कैब आया ही घर लाती है

नींद जब आती है तो आया ही सुलाती है
जैसी भी उसको आती लोरी सुनाती है
उसे सुलाने है मैं अक्सर वो भी सो जाती है
कभी जब मचलता है तो टी.वी दिखाती है

जो टीचर मैम बताती है वही वह मानता है
देसी खाना छोड़कर पीजा बर्गर खाता है
वीक ऐन्ड पर मॉल में पिकनिक मनाता है
संडे की छुट्टी मॉम डैड के संग बिताता है

वक्त नहीं रुकता है तेजी से गुजर गुजर जाता है
वह स्कूल से निकल के कालेज गे आता है
कान्वेट में पढ़ने पर इंडिया कहाँ भाता है
आगे पढ़ाई करने वह विदेश चला जाता है

वहाँ नये दोस्त बनते हैं उनमें रम जाता है

माँ बाप के पैसो से ही खर्चा चलता है

धीरे-धीरे वहीं की संस्कृति में रंग जाता है

माँ-बाप से रिस्ता पैसों का रह जाता है

कुछ दिन में उसे काम वहीं मिल जाता है

जीवन साथी शीघ्र ढूँढ़ वहीं बस जाता है

माँ-बाप ने जो देखा ख्वाब वो टूट जाता है

बेटे के दिमाग में भी कैरियर रह जाता है

बुढ़ापे में माँ-बाप अब अकेले रह जाते हैं

जिनकी अनदेखी की उनसे आँखें चुराते हैं

क्यों इतना कमाया ये सोच के पछताते हैं

घुट-घुट कर जीते हैं खुद से भी शरमाते हैं

हाथ पैर ढीले हो जाते हैं, चलने में दुःख पाते हैं

दाढ़-दाँत गिर जाते मोटे चश्मे लग जाते हैं

कमर भी झुक जाती है कान नहीं सुन पाते हैं

वृद्धाश्रम में दाखिल हो जिंदा ही मर जाते हैं।

मुकेश कुमार सैनी
वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी

योग



योग का अर्थ है जोड़ना। योग एक कला है जो हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ता है और हमें मजबूत और शांतिपूर्ण बनाता है। योग के माध्यम से आत्मिक संतुष्टि, शांति और ऊर्जावान चेतना की अनुभूति प्राप्त होती है, जिससे हमारा जीवन तनाव मुक्त तथा हर दिन सकारात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ता है।

वर्ष 2015 से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की शुरुआत हुई। प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

वर्तमान समय में योग का महत्व बढ़ता जा रहा है। भागदौड़ भरे जीवन में योग करने से शारीरिक और मानसिक अनुशासन का संतुलन बना रहता है। योग तनाव और चिंता से मुक्ति प्रदान करता है। योगासन शरीर में लचीलापन और आत्मविश्वास के विकसित करते हैं। कहा गया है "योग से स्वास्थ्य, स्वास्थ्य से समृद्धि अर्थात यदि हम स्वस्थ रहते हैं योग करने से तो पैसे की बचत स्वयं ही होती है।

योग के बढ़ते हुए महत्व के कारण योग को विद्यालयों में भी शुरू किया गया है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही योग की शिक्षा देना बहुत जरूरी है। योग से बच्चों की सहनशीलता बढ़ती है और मन शक्तिशाली रहता है।

योग के आठ अंग हैं-

1. यम (शपथ लेना)
2. नियम (आत्म अनुशासन)
3. आसन
4. प्राणायम
5. प्रत्याहार
6. धारणा (एकाग्रता)
7. ध्यान (मेडिटेशन)
8. समाधि (अंतिम मुक्ति)

योग के मुख्यतः लाभ निम्नांकित हैं (आंतरिक लाभ)-

- * शरीर में रक्त का संचार बेहतर होता है।
- * प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है।
- * योग शकावट दूर करके शरीर को ऊर्जावान बनाता है।
- * नींद बेहतर आती है।
- * हृदय रोग से बचाव करता है।
- * रक्तचाप संतुलित रहता है।
- * मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाता है।
- * माइग्रेन को सही करने में फायदेमंद है।
- * शरीर की कब्ज, ब्रॉंकाइटिस, अर्थराइटिस, अस्थमा, कमर दर्द, साइनस, जैसी बीमारियों को कम करने में योग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

योगासन के बाहरी स्वास्थ्य लाभ-

- आज तनाव भरे माहौल में लोगों पर बढ़ती उम्र का असर समय से पहले नजर आने लगता है। योग से समय से पूर्व चेहरे पर पड़ने वाली झुर्रियों को कम किया जा सकता है।
- गलत खानपान और दिनचर्या के कारण बढे हुए वजन को कम करने में योग कारगर है।
- नियमित रूप से योग करने से हड्डियां व मांसपेशियां मजबूत होती हैं।
- सहनशीलता में वृद्धि होती है जिससे गुस्से पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

योगासन के भावनात्मक फायदे -

- अच्छा मूड रहता है जो जीवन में सफलता हासिल करने के लिए जरूरी होता है।
- तनाव को कम करता है।

चिंता से छुटकारा मिलता है।

कई बार ऑफिस और घर के काम का इतना दबाव बढ जाता है कि व्यक्ति अवसाद की समस्या

से ग्रसित हो जाता है। अवसाद से राहत दिलाने में कारगर है।

◆ निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है।

◆ एकाग्रता बढ़ती है।

◆ अच्छी याददाश्त के लिए ।

◆ सकारात्मक विचारों को उत्पन्न करने में ।

◆ अतः यह कहा जा सकता है कि योग दैनिक जीवन में बहुत ही जरूरी है।

योग करने से पहले और करते समय कुछ नियमों का पालन जरूरी है जैसे-

⇒ सुबह जल्दी उठकर योग करना अधिक फायदेमंद होता है।

⇒ योगासन सुबह खाली पेट करना चाहिए।

⇒ योगासन से पहले हल्का वॉर्मअप करना जरूरी है ताकि शरीर खुल जाए

⇒ पहली बार योगासन करने वालों को शुरुआत को हल्के योगासन करने चाहिए।

⇒ योगासन करने के तुरंत बाद नहाना नहीं चाहिए ।

⇒ योग करने की जगह साफ और शांत होनी चाहिए।

⇒ किसी भी आसन को अधिक जोर न लगाए, अपनी क्षमता के अनुसार करें ।

⇒ अगर कोई शाम को योग करें तो खाना खाने के तीन-चार घंटे बाद करें ।

⇒ गर्भवती महिला को योग करने के लिए योग प्रशिक्षक की सलाह लेनी चाहिए।

उपरोक्त नियमों का पालन करके योगासन का बेहतर फायदा उठाया जा सकता है। समस्त स्वास्थ्य के लिए योग बहुत जरूरी है

राजबाला
वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी

"चिट्ठी की महिमा"



वो चिट्ठियाँ कहाँ खो गई
जिनमें लिखने के सलीखे छुपे होते थे।
कुशलता की कामना से शुरु होते थे
बड़ों के चरणस्पर्श पर खत्म होते थे
और बीच में लिखी होती थी जिंदगी---

नन्हे के आने की खबर,
मां की तबियत का दर्द
और पैसे भेजने का अनुनय
फसलों के खराब होने की वजह
कितना कुछ सिमट जाता था,
एक नीले पीले से कागज में
जिसे नवविवाहिता भाग कर दिल से लगाती थी
और अकेले में आंखों से आंसू बहाती,

माँ की आस थीं ये चिट्ठियां

पिता का संबल थीं ये चिट्ठियाँ

बच्चों का भविष्य थीं ये चिट्ठियां

डाकिया चिट्ठी लाएगा

और कोई बांच कर सुनाएगा

देख-देख कर चिट्ठी को

कई कई बार छूकर चिट्ठी को

अनपढ़ भी पढ़ लेते थे, अब तो स्क्रीन पर अंगूठा दौड़ता है

और अक्सर ही दिल तोड़ता है

मोबाईल का स्पेस भर जाए तो

सबकुछ ही मिनिट में डिलीट होता है

सब कुछ सिमट गया है इंच में

जैसे मकान सिमट गए फ्लैटों में

जज्बात सिमट गए मैसेजों में

चूल्हे सिमट गए गैसों में

और इंसान सिमट गए पैसों में।

मुकेश कुमार सैनी
वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी

हिंदी कार्यशाला का आयोजन



एसिक पखवाड़ा-2024 की कुछ झलकियां



राजभाषा कार्यान्वयन की विभिन्न गतिविधियां



चलते-चलते...



स्वास्थ्य पर कविता
(हेल्थ इज वेल्थ)



Health है जीवन में सबसे अमूल्य wealth

ध्यान रखना जरूरी।

जिन्दगी न बन जाये मजबूरी

रखिए इसका हमेशा ध्यान

परिवार का होगा कल्याण

कोई भी हो कितना विद्वान

इसके बिना न हो सके महान

अच्छा स्वास्थ्य जीवन की पहली जरूरत

सो दिखाओ हमेशा, स्वस्थ होने की फितरत

आनंदायक तभी जीवन होता, जब कोई कष्ट बॉडी में नहीं होता।

सबसे बड़ा उपहार ईश्वर का शरीर।

अतः स्वास्थ्य खिलवाड़ का न चलाओ तीर

रखो सेहत का ध्यान बनो शूरवीर।

सीमास कुमार

डीएचएल

डाक्टर असली वारियर्स



कोरोना के इस युग में दोस्तो,
डॉक्टर हैं असली वारियर्स
खेल कर अपनी जान पर,
बन गए है सुपीरियर
करें मानव की सुरक्षा
है नींद उन्होंने त्यागी
देकर नवजीवन सबको,
काम किया बड़ा भागी
अपना चैन और आराम खोकर,
किया सबका सेवा सत्कार
इनके ही प्रयासों से,
रुक गया कुछ हद तक कोरोना का विकास
भूल गए ये अपनी खुशियां,
लाने को सबके जीवन में हास
कष्ट सहे कितने इन्होंने पर नहीं हुए उदास
अगर ये डॉक्टर न होते, तो हम हो जाते परेशान
ये न होते सोचो फिर कैसे मिलता हम सबको जीवनदान

मुनीष शर्मा
डीएचएल

आईपी की कलम से...



आज हमारी कम्पनी (Nestle India P. Ltd.) में Esic Hospital मानेसर के द्वारा चिकित्सा शिविर लगाया गया है, जिसने कि 3 बड़े डाक्टर एवं अन्य पैरामैडीकल स्टाफ, फार्मसी सभी उपस्थित हैं। मेरा ESIC contribution पिछले 8 साल से कट रहा है। मैंने अपनी नौकरी के दौरान पहली बार इतना बढ़िया केप नहीं देखा, जिसमें ब्लड शुगर, बीपी चैक किया तथा तीनों डॉक्टरों की राय ली एवं 2-3 बीमारियों जो कि मुझे थीं उसके बारे में बहुत अच्छे से चैक किया तथा फिर फ्री में दवाईयां दीं तथा यह भी बोला गया कि अगर आराम न आए तो Hospital में Visit कर लेना।

डॉक्टरों का इतना प्रेममय व्यवहार मैंने पहले कभी नहीं देखा। उन्होंने यह भी पूछा कि यदि आपको किसी स्टाफ के बारे में कोई शिकायत है तो हमें बताएं, हम इसका निपटारा करेंगे। हम सदैव आपकी सेवा के लिए हाजिर हैं। मैं पूरी कंपनी की तरफ से सभी स्टाफ एवं डॉक्टरों का धन्यवाद करता हूं

विनीत कुमार

(आई पी सं.6929768610)

औरत हूँ मैं !!



चुप रहूँ मैं, सहूँ मैं
बोलूँ तो बदतमीज हूँ मैं,
औरत हूँ मैं।

घूँघट करूँ मैं, सिर झुकाऊँ मैं
देखे कोई और तो बदचलन हूँ मैं
औरत हूँ मैं।

पराए घर की मैं, पराए घर से मैं
घर से बेघर हूँ मैं
औरत हूँ मैं।

पढ़ी-लिखी मैं, समझदार मैं
पेशे से - गृहिणी हूँ मैं
औरत हूँ मैं।

बेटी मैं, पत्नी मैं बात हक की तो,
सिर्फ एक औरत हूँ मैं
औरत हूँ मैं।



राजबाला
सीनियर नर्सिंग ऑफिसर

उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के घरेलू उपाय

लहसुन हर घर में इस्तेमाल में लाया जाता है। लहसुन ब्लड प्रेशर ठीक करने में बहुत मददगार होता है। लहसुन से हाई बीपी को नियंत्रित कर सकते हैं।

एक बड़ा चम्मच आँवले का रस और इतना ही शहद मिलाकर सुबह-शाम लेने से हाई ब्लड प्रेशर में लाभ होता है। इससे उच्च रक्तचाप का उपचार होता है। जब ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ हो तो आधे गिलास गुनगुने पानी में काली मिर्च पाउडर का एक चम्मच घोल लें। इसे दो-दो घंटे के बाद पीते रहें। इससे हाई ब्लड प्रेशर के उच्च रक्तचाप के लक्षणों का उपचार होता है। तरबूज के नियंत्रण में तरबूज लाभ पहुंचाता है। तरबूज के बीज की गिरी तथा खसखस अलग-अलग पीसकर बराबर मात्रा में रख लें। इसका रोजाना एक-एक चम्मच सेवन करें। बड़े हुए ब्लड प्रेशर में एक गिलास पानी में आधा नींबू निचोड़कर तीन-तीन घण्टे के अन्तर में पीना चाहिए। इससे उच्च रक्तचाप का इलाज होता है।



उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए पाँच तुलसी के पत्ते तथा दो नीम की पत्तियों को पीस लें। इसे एक गिलास पानी में घोलकर खाली पेट सुबह पिएं। इससे हाई ब्लड प्रेशर के लक्षणों का इलाज होता है। हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को नंगे पैर हरी घास पर 10-15 मिनट तक चलना चाहिए। रोजाना चलने से ब्लड प्रेशर नॉर्मल हो जाता है। उच्च रक्तचाप के उपचार के लिए ताजा पालक और गाजर का रस निकालें। इसे रोज पिएं। इसका रस लाभकारी सिद्ध होता है।

उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए करेला और सहजन के फल का सेवन करें। यह उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इससे हाई

ब्लड प्रेशर के लक्षण ठीक होते हैं। उच्च रक्तचाप के उपचार के लिए ब्राउन चावल खाना चाहिए। उच्च रक्तचाप के रोगियों को ब्राउन चावल बहुत लाभ देता है और हाई ब्लड प्रेशर के लक्षण दूर होते हैं। 3 ग्राम मेथीदाना पाउडर सुबह-शाम पानी के साथ लें। इसे प्रतिदिन खाने से लाभ मिलता है। इससे उच्च रक्तचाप का इलाज होता है। उच्च रक्तचाप के उपचार के लिए टमाटर का सेवन करें। टमाटर से हाई ब्लड प्रेशर नियंत्रित होता है। रोजाना एक टमाटर या एक कप टमाटर का जूस पिएं। आप अनार से बीपी कम करने के उपाय कर सकते हैं। रोजाना एक अनार या अनार का जूस पीने से हाई ब्लड प्रेशर कम हो जाता है।

आप चुकंदर से भी बीपी कम करने के उपाय कर सकते हैं। एक चुकंदर और आधी मूली लें। इनको छील कर इनके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। मिक्सर में डालकर जूस निकाल लें। यह जूस दिन में एक बार पीने से हाई बी. पी. कंट्रोल (home remedies for high bp) में आ जाता है।

बीपी कम करने के लिए आप घरेलू उपाय कर सकते हैं। इसके लिए आप रोजाना अपने खाने में तिल के तेल का प्रयोग करें। इससे बीपी कम हो जाता है। सबसे पहले किसी फल का जूस या स्मूदी बनाएं। फिर इसमें ताजा अदरक डालकर पीयें। इसके अलावा अपने खाने में प्रतिदिन अदरक का प्रयोग करें। आप नारियल से भी बीपी कम करने के उपाय कर सकते हैं। आप पूरे दिन में 2-3 बार नारियल पानी का प्रयोग करें। इससे हाई बीपी कम हो जाता है।

मनोज कुमार,
प्रवर श्रेणी लिपिक



नारी तेरे कितने रूप.....



स्त्री

स्त्री शब्द मूलतः संस्कृत की “स्त्ये” धातु से बना है। यह समूहवाची शब्द है जिसका भावार्थ है- ढेर, संचय, घनीभूत, स्थूल। अन्य भावार्थ कोमल, मृदुल, स्निग्ध आदि भी मिलते हैं। संस्कृत में किसी भी जीव के पूरक पात्र अर्थात मादा के लिए स्त्री शब्द है क्योंकि नए जीव की सृष्टि का अनोखा गुण उसी के पास है। इसीलिए वह मातृशक्ति है, इसीलिए वह स्त्री है।

महिला

महिला शब्द संस्कृत की “मह” धातु से बना है। महानता, महान, महीयसी, महा, महत्तर जैसे तमाम प्रधानता स्थापित करनेवाले भावों के समेटे हुए शब्दों का जन्म भी उसी “मह” से हुआ है जिससे महिला शब्द बना है। मह में सम्मान, आदर, महत्ता, श्रद्धा महत्वपूर्ण समझना जैसे भाव हैं। जाहिर है मह से बने महिला शब्द में यही सारे भाव शामिल हैं। महिला से महिरा, मिहरा, महरा या मेहरारू जैसे अनेक रूप बने। हिन्दी की पूर्वी बोलियों में इसका अर्थ होता है पत्नी, घरवाली, भार्या आदि। मेहरारू से ही शब्द गढ़ लिया और महिला का एक नया रूप महरी या महिरी सामने आया जिसमें कामवाली बाई की अर्थवत्ता समायी है।

मह धातु की अवनति का एक अन्य उदाहरण मेहतर में सामने आता है। इसे पूरे देश में सफाईकर्मियों के लिए प्रयोग किया जाता है। शुद्ध रूप में यह है महत्तर यानी विशिष्ट, गुरुतर और बड़े काम करनेवाला। इस गुरुता का बोध रत्तीभर भी मेहतर में नजर नहीं आता।

ऐसा माना जाता है कि विदेशी आक्रमणों के वक्त पराजय की स्थिति में दासता और दंड से बचने के लिए विभिन्न सवर्ण वर्गों के लोग समय-समय पर अपने मूल स्थान से अन्यत्र स्थानों को पलायन करते रहे और आजीविका के लिए श्रमजीवी बने और महत्तर कहलाए। हर तरह की दुशवारियां झेलते हुए इन्हीं में से कुछ समूह पनप गए और कुछ इस हद तक बदहाल हुए कि उन्हें जातीय गोरव की स्मृतियों तक छिन गई क्योंकि ताकतवर वर्ग द्वारा उन्हें निकृष्ट कर्म अपनाने पर विवश किया गया। संभवतः मेहतर के मूल में यही हालात रहे हों। मेहतर से ही हमने मेहतरानी शब्द भी बना लिया।

नारी

नारी शब्द से जाहिर है कि नर का स्त्रीवाची रूप है। पर ऐसा है नहीं नारायण शब्द में हमें नारी की व्युत्पत्ति का संकेत मिलता है। मनुस्मृति में नारायण की व्युत्पत्ति बताते हुए कहा गया है-"आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः, ता यदस्यायनं पूर्व तेन नारायणः स्मृतः" अर्थात् "सृष्टिपूर्व 'नार' नामक जल ही 'नर' (स्वयंभू पुरुष) का आश्रय था। इसीलिए वह नारायण है।"

वैदिक ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर थोड़े बहुत पाठान्तर के साथ यही बात कही गई है कि सृष्टि का आरम्भ जल तत्व से हुआ है उसमें ही पितृत्व व मातृत्व है। यहाँ नर को परमब्रह्म माना गया है अर्थात् सृष्टि को उत्पन्न करने वाला नर (पुरुष)। 'नार' अर्थात् स्वयंभू परब्रह्म की अन्तर्निहित विराट योनि यानी मातृत्व नारायण (नरसूनव- नरपुत्र या नारपुत्र)। सृष्टि निर्माण जल से हुआ है- यह सर्वव्यापी परिकल्पना वैश्विक है।

संस्कृत की एक धातु है नृ जिसका अर्थ होता है मानव, मनुष्य, मनुष्यजाति। इसमें स्त्री-पुरुष का भेद नहीं है। नृ से ही पुरुषवाची नर शब्द बना है और स्त्रीवाची नारी भी। नृ में ही सिंह, पालः या पतिः जैसे शब्दों की संधि से नृसिंह, नृपाल, नृपति जैसे शब्द बनते हैं। नृपाल या नृपति का अर्थ प्रभु, राजा, अधिपति आदि होता है।

नृसिंह, नरसिंह का ही शुद्ध रूप है जो भगवान विष्णु का एक अवतार हैं। नृपशु का अर्थ नरपशु होता है। नृपशु में जहां मनुष्य के पशुत्व का भाव है वहीं इससे बने नर पशु में पुरुष के पशुत्व का आभास होता है जबकि ऐसा नहीं है। स्त्री को भी नरपशु की उपमा दी जा सकती है। इसी तर्क प्रणाली पर नृमेध यज्ञ के नरमेध यज्ञ को तोल कर देखें तो अर्थ यही होगा- मनुष्यों के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

विशेष

बुद्धिमत्ता और माधुर्य के साथ शिखर को छूती नारी जब पूरी दुनिया में अपने अस्तित्व का परचम लहराती है तो वह साक्षात् सरस्वती का रूप ही तो है। वहीं अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का साहस करती नारी जब दुराचार के प्रति रौद्र रूप अख्तियार कर लेती है तो वह महाकाली है और ममतामयी मां के रूप में जब अपनों की रक्षा और देखभाल के लिए कृतसंकल्प होती है तो मां दुर्गा की प्रतिकृति। जब वह सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक की तमाम जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है तो वह अन्नपूर्णा है और महीने की तनखाह में से छोटी-छोटी रकम बचाकर जब वह घर और अपनों की हर जरूरत पूरा करती है तब मां लक्ष्मी का अवतार।

वंदना, प्रवर श्रेणी लिपिक

वर्ष के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित
अन्य विशिष्ट उपलब्धियों/ कार्यों का संक्षिप्त विवरण

राजभाषा शाखा

- * वर्ष के दौरान 04 विराकास की तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया तथा कुल 04 कार्यशालाएं आयोजित की गईं।
- * हिंदी पखवाड़े के समय टिप्पण आलेखन, निबंध, राजभाषा ज्ञान, वाक् प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।
- * प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा जिस कर्मचारी ने इन हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लिया था परंतु पुरस्कार प्राप्त नहीं किया था, ऐसे कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिया गया।
- * कुल 10 शाखाओं / विभागों का राजभाषा निरीक्षण किया गया।
- * हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन / मूल हिंदी टिप्पण-आलेखन योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान किए गए।
- * नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठकों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लिया गया।

संवैधानिक प्रावधान

अनुच्छेद (Article) 343	संध की राजभाषा हिंदी तथा लिपि देवनागरी होगी। भारतीय अंको के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रयोग होगा।
344	राजभाषा आयोग एवं राजभाषा संसदीय समिति
345	राज्यों की राजभाषाएं
346	राज्यों के बीच सरकारी पत्राचार
347	राज्य की किसी विशेष भाषा के संबंध में
348	उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा
349	भाषा से संबंधित नियम बनाने के लिए विशेष प्रक्रिया
350	अभ्यावेदन की भाषा प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देना
351	राजभाषा के विकास के लिए निदेश

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)

1. सामान्य आदेश (General orders)	8. करार (Agreement)
2. संकल्प (Resolution)	9. अनुज्ञप्ति (Licence)
3. नियम (Rule)	10. अधिसूचना (Notification)
4. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)	11. अनुज्ञा पत्र (Permit)
5. सूचना (Notices)	12. प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन (Administrative and other reports)
6. निविदा प्ररूप (Tender Forms)	13. संसद में प्रस्तुति हेतु रिपोर्ट (Administrative reports laid in Parliament)
7. संविदा (Contract)	14. संसद में प्रस्तुत राजकीय प्रलेख (Official papers to be laid in Parliament)

क्रान्तिकारी नायक मंगल पाण्डेय

वीरवर मंगल पाण्डेय का जन्म 19 जुलाई 1827 को वर्तमान उत्तर प्रदेश, जो उन दिनों संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के नाम से जाना जाता था, के बलिया जिले में स्थित नगवा गाँव के एक सामान्य परंतु प्रतिष्ठित सरयूपारीण ब्राम्हण परिवार में हुआ था। स्वाधिनता की वेदी पर पहला बलिदान ब्रितानी साम्राज्य के वफादार, चतुर व्यापारी, जो भारत में आए तो व्यापार करने थे, लेकिन इस देश में चल रही फूट ने उन्हें इस पर राज करने की जिप्सा जगा दिया।

सन् 1757 ई0 से ब्रिटिशों के गुलाम बने भारत में सो वर्षों बाद इस दासता से मुक्ति के लिए सामूहिक संघर्ष करने की स्थितियं बन पायी। 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को जन-जन का मुक्ति संग्राम बनाने लिए हमारे रणनीतिकारों ने बड़े ही व्यापक पैमाने पर तैयारी भी किया था। इस समवेत मुक्ति संग्राम को आरम्भ करने की तिथि भी इसके नायकों द्वारा 31 मई 1857 निर्धारित की गयी थी। लेकिन इस तिथि से दो माह पूर्व ही गंगा की उर्वर मिट्टी में पड़ा क्रान्ति बीज फूट पड़ा। 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (कलकत्ता) में इस संग्राम के अग्रइल, आगरा- अवध प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के गाजीपुर जिले (अब बलिया जिला) की बलिया तहसील के नगवा गाँव निवासी, अंग्रेजी फौज की 34 नम्बर देशी सेना की 39वीं पलटन के 1446 नम्बर सिपाही श्री मंगल पाण्डे ने सेना के दो अधिकारियों मि बॉफ और मि. हयूसन को मौत के घाट उतार कर, स्वाधिनता की बलिवेदी पर अपना स्थान आरक्षित कर लिया। वो सन 1849 में 22 साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए। मंगल बैरकपुर की सैनिक छावनी में 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री" की पैदल सेना में एक सिपाही थे।

ईस्ट इंडिया कंपनी की रियासत व राज हड़प और फिर इशाई मिस्सरियों द्वारा धर्मान्तर आदि की नीति ने लोगों के मन में अंग्रेजी हुकुमत के प्रति पहले ही नफरत पैदा कर दी थी और जब कंपनी की सेना की बंगाल इकाई में एनफील्ड पी 53" राइफल में नई कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ तो मामला और बिगड़ गया।

इन कारतूसों को बंदूक में डालने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था और भारतीय सैनिकों के बीच ऐसी खबर फैल गई कि इन कारतूसों को बनाने में गाय तथा सूअर की

चर्बी का प्रयोग किया जाता। उनके मन में ये बात घर कर गयी कि अंग्रेज हिन्दुस्तानियों का धर्म भ्रष्ट करने पर अमादा हैं क्योंकि ये हिन्दू और मुसलमानों दोनों के लिए नापाक था।

मंगल पांडे एक ऐसे भारतीय सैनिक थे जिन्होंने 29 मार्च 1857 को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। उस समय यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया था। (बाद में भारत की पहली लड़ाई के नाम से भी जाना जाने लगा)। हमले के कुछ समय बाद ही उन्हें फासी की सजा सुनाई गयी और कुछ दिन बाद उन्हें फांसी दे दी गयी, लेकिन फांसी देने के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी उनके पार्थिव शरीर के पास जाने से भी डर रहे थे।



भारत में, मंगल पांडे एक महान क्रांतिकारी के नाम से जाने जाते हैं, जिन्होंने ब्रिटिश कानून का विरोध किया। भारत सरकार द्वारा 1984 में उनके नाम के साथ ही उनके फोटो का एक स्टैम्प भी जारी किया। वे पहले स्वतंत्रता क्रांतिकारी थे जिन्होंने सबसे पहले ब्रिटिश कानून का विरोध किया था। मंगल पांडे चर्बी युक्त कारतूसों के खिलाफ थे। वे भली-भांति जानते थे की ब्रिटिश अधिकारी, हिंदु सैनिकों और ब्रिटिश सैनिकों में भेदभाव करते थे। इन सब से ही परेशान होकर उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों से लड़ने का बीड़ा उठाया। उन्होंने आज़ादी की लड़ाई की चिंगारी भारत में लगाई थी जिसने बाद में एक भयंकर रूप धारण कर लिया था। और अंत में भारतीयों से हारकर अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही पड़ा। अंग्रेजी हुकूमत ने 6 अप्रैल को फैसला सुनाया कि मंगल पाण्डे को 18 अप्रैल को फांसी पर चढ़ा दिया जाये। परन्तु बाद में यह तारीख 8 अप्रैल कर दी गई ताकि विद्रोह की आग अन्य रेजिमेन्टों में भी न फैल जाये। मंगल पाण्डे के प्रति लोगों में इतना सम्मान पैदा हो गया था कि बैरकपुर का कोई जल्लाद फांसी देने को तैयार नहीं हुआ। नजीतन कल्कता से चार जल्लाद बुलाकर मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल, 1857 के दिन फांसी

पर चढा दिया गया। मंगल पाण्डे को फ़ांसी पर चढाकर अंग्रेजी हुकूमत ने जिस विद्रोह की चिंगारी को खत्म करना चाहा, वह तो फ़ैल ही चुकी थी और देखते ही देखते इसने पूरे देश को अपने आगोश में ले लिया।

14 मई 1857 को गवर्नर जनरल लार्ड वारेन हेस्टिंगज ने मंगल पाण्डे का फ़ांसी नामा अपने आधिपत्य में ले लिया। 8 अप्रैल, 1857 को बैरकपुर, बंगाल में मंगल पाण्डे को प्राण दण्ड किया जाने के ठीक सवा महीने बाद, जहां से उसे कलकत्ता के फ़ोर्ट विलियम कालेज में स्थानान्तरित कर दिया गया था। सन 1905 के बाद जब लार्ड कर्जन ने उड़ीसा, बंगाल, बिहार और मध्य प्रदेश की थल सेनाओं का मुख्यालय बनाया गया तो मंगल पाण्डे का फ़ांसीनामा जबलपुर स्थान्तरित कर दिया गया। जबलपुर के सेना आयुध कोर के संग्राहलय में मंगल पाण्डे का फ़ांसीनाम आज भी सुरक्षित रखा है। अंग्रेजी सेना द्वारा बंदी

वीर मंगल पांडे ने अपने कर्तव्य की पूर्ति कर दी थी। शत्रु के रक्त से भारत भूमि का तर्पण किया था। मातृभूमि की स्वाधीनता जैसे महत कार्य के लिए अपनी रक्तांजलि देना भी अपना पावन कर्तव्य समझा। मंगल पांडे ने अपनी बंदूक अपनी छाती से अड़ाकर गोली छोड़ दी। गोली छाती में सीधी न जाती हुई पसली की तरफ फिसल गई और घायल मंगल पांडे अंग्रेजी सेना द्वारा बंदी बना लिये गये। अंग्रेजों ने भरसक प्रयत्न किया कि वे मंगल पांडे से क्रांति योजना के विषय में उसके साथियों के नाम-पते पूछ सकें; पर वह मंगल पांडे थे, जिनका मुँह अपने साथियों को फेंसाने के लिए खुला ही नहीं। निधन:

फ़ौजी अदालत ने न्याय का नाटक रचा और फैसला सुना दिया गया। 8 अप्रैल का दिन मंगल पांडे की फ़ांसी के लिए निश्चित किया गया। बैरकपुर के जल्लादों ने मंगल पांडे के पवित्र खून से अपने हाथ रँगने से इनकार कर दिया। तब कलकत्ता से चार जल्लाद बुलाए गए। 8 अप्रैल, 1857 के सूर्य ने उदित होकर मंगल पांडे के बलिदान का समाचार संसार में प्रसारित कर दिया। भारत के एक वीर पुत्र ने आज़ादी के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

रवि कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक



जलियाँवाला के प्रतिशोधी ऊधमसिंह



ऊधमसिंह का जन्म ग्राम सुनाम (जिला संगरूर, पंजाब) में 26 दिसम्बर, 1899 को सरदार टहलसिंह के घर में हुआ था। मात्र दो वर्ष की अवस्था में ही इनकी माँ का और सात साल का होने पर पिता का देहान्त हो गया। ऐसी अवस्था में किसी परिवारजन ने इनकी सुध नहीं ली। गली-गली भटकने के बाद अन्ततः इन्होंने अपने छोटे भाई के साथ अमृतसर के पुतलीघर में शरण ली। यहाँ एक समाजसेवी ने इनकी सहायता की।

19 वर्ष की तरुण अवस्था में ऊधमसिंह ने 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व पर जलियाँवाला बाग, अमृतसर में हुए नरसंहार को अपनी आँखों से देखा। सबके जाने के बाद रात में वे वहाँ गये और रक्तरंजित मिट्टी माथे से लगाकर इस काण्ड के खलनायकों से बदला लेने की प्रतिज्ञा की। कुछ दिन उन्होंने अमृतसर में एक दुकान भी चलायी। उसके फलक पर उन्होंने अपना नाम राम मोहम्मद सिंह आजाद' लिखवाया था। इससे स्पष्ट है कि वे स्वतन्त्रता के लिए सब धर्म वालों का सहयोग चाहते थे।

ऊधमसिंह को सदा अपना संकल्प याद रहता था। उसे पूरा करने हेतु वे अफ्रीका से अमरीका होते हुए 1923 में इंग्लैंड पहुँच गये। वहाँ क्रान्तिकारियों से उनका सम्पर्क हुआ। 1928 में वे भगतसिंह के कहने पर वापस भारत आ गये; पर लाहौर में उन्हें शस्त्र अधिनियम के उल्लंघन के आरोप में पकड़कर चार साल की सजा दी गयी। इसके बाद वे फिर इंग्लैंड चले गये। तब तक जलियाँवाला बाग में गोली चलाने वाला जनरल डायर अनेक शारीरिक व मानसिक रोगों से ग्रस्त होकर 23 जुलाई, 1927 को आत्महत्या कर चुका था; पर पंजाब का तत्कालीन गवर्नर माइकेल ओ डायर अभी जीवित था।

13 मार्च, 1940 को वह शुभ दिन आ गया, जिस दिन ऊधमसिंह को अपना संकल्प पूरा करने का अवसर मिला। इंग्लैंड की राजधानी लन्दन के कैक्सटन हॉल में एक सभा होने वाली थी। इसमें जलियाँवाला बाग काण्ड के दो खलनायक सर माइकेल ओ डायर तथा भारत के तत्कालीन सेक्रेटरी ऑफ स्टेट लार्ड जेटलैंड आने वाले थे। ऊधमसिंह चुपचाप मंच से कुछ दूरी पर जाकर बैठ गये और उचित समय की प्रतीक्षा करने लगे।

माइकेल ओ डायर ने अपने भाषण में भारत के विरुद्ध बहुत विषवमन किया। भाषण पूरा होते ही ऊधमसिंह ने गोली चला दी। ओडवायर वहीं ढेर हो गया। अब लार्ड जेटलैंड की बारी थी; पर उसका भाग्य अच्छा था। वह घायल होकर ही रह गया। सभा में भगदड़ मच गयी। ऊधमसिंह चाहते, तो भाग सकते थे; पर वे सीना तानकर वहीं खड़े रहे और स्वयं को गिरफ्तार करा दिया।

न्यायालय में वीर ऊधमसिंह ने आरोपों को स्वीकार करते हुए स्पष्ट कहा कि मैं पिछले 21 साल से था। माइकेल ओडवायर और आत्मा को कुचलना चाहते कर्तव्य था। इससे बढ़कर अपनी मातृभूमि के लिए मर रहा हूँ।



प्रतिशोध की आग में जल रहा जेटलैंड मेरे देश भारत की थे। इसका विरोध करना मेरा मेरा सौभाग्य क्या होगा कि मैं

ऊधमसिंह को 31 जुलाई, 1940 को पेण्टनविला जेल में फाँसी दे दी गयी। मरते समय उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा - 10 साल पहले मेरा प्यारा दोस्त भगतसिंह मुझे अकेला छोड़कर फाँसी चढ़ गया था। अब मैं उससे वहाँ जाकर मिलूँगा। वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 27 साल बाद 19 जुलाई, 1974 को उनके भस्मावशेषों को भारत लाया गया। पाँच दिन उन्हें जनता के दर्शनार्थ रखकर ससम्मान हरिद्वार में प्रवाहित कर दिया गया।

हिमांशु जांगिड
आशुलिपिक

इच्छा कभी पूरी नहीं होती.....



ययाति चक्रवर्ती सम्राट थे, पर अपने ससुर शुक्राचार्य के श्राप के कारण जल्दी बूढ़े हो गए। मौत ने आकर उसे कहा, अब आप चलें।

ययाति ने कहा अभी तो मैं कुछ भोग ही नहीं पाया। थोड़े दिन और मुझे दे दो। कई बातें अधूरी रह गयी हैं। मौत ने कहा - वो कभी पूरी नहीं होती, हर कोई इसी बात के लिए रोता है।

लेकिन ययाति ने ज़िद की, एक मौका दो, मैं जल्दी ही कर लूंगा। सौ साल मुझे और दे दो।

मौत ने कहा- मेरा तो महीने का टारगेट है। तेरे इतने बेटे हैं, इनमें से कोई अपनी जवानी तुझे दे दे तो कुछ हो सकता है।

ययाति ने अपने बेटों को बुलाया। उसमें कोई अस्सी साल का था, कोई पचहत्तर साल का, कोई सत्तर साल का। वे भी बूढ़े हो गए थे, एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। अंततः सब से छोटा बेटा उठकर खड़ा हुआ। उसकी उम्र तो कोई बीस साल से ज्यादा नहीं थी। मौत ने उसके बेटे को कहा, बेवकूफ, तेरे बड़े भाई कोई जाने को राजी नहीं हैं, तू क्यों फंस रहा है?

उस बेटे ने कहा -बड़े भाइयों की बड़े भाई जानें।

बड़े भाइयों ने कहा- हम क्यों जाएं? जब पिता का सौ साल में जीवन का रस पूरा नहीं हुआ, तो हम तो अभी सत्तर साल ही जीये हैं, कोई साठ ही साल जीया, हमारा रस कैसे पूरा हो जाए? और जब पिता जाने को तैयार नहीं हैं, तो हम क्यों जाने को तैयार हों? अगर जीवन से उनका मोह है तो हमारा भी है। हमारा तो और भी अधूरा रह गया है अभी। यह तो हम से कम से कम तीस साल, बीस साल ज्यादा जी लिए हैं। हम क्यों छोड़ें? हम भी पूरा भोगना चाहते हैं।

छोटे बेटे का नाम पुरु था। उसने कहा कि पिता सौ साल में नहीं भोग पाए, तो मैं भी क्या ही कर लूंगा? अस्सी साल और धक्के खाने से क्या मतलब है? जाना तो पड़ेगा। तुम सौ साल बाद आओगे और पिता तो सौ साल में भी नहीं भोग पाए और ज्यादा के लिए रो रहे हैं, आंसू बहा रहे हैं।

एक ही बात को देखने के तरीके हैं। बड़े भाइयों ने कहा कि हम क्यों जाए, जब यह बूढ़ा जाने को मरने को तैयार नहीं तो बात में तर्क है। लेकिन बड़ा तर्क है। वह यह साल में इनका काम पूरा



तैयार नहीं है? जब बाप बेटा क्यों मरे? उनकी दूसरे बेटे की भी बात में कहता है कि जब सौ नहीं हुआ, तो अब मैं ही

आगे और अस्सी साल धक्के क्यों खाऊं? यह काम तो कभी पूरा होने वाला नहीं है, मेरी समझ में आ गया, मेरी जवानी ले लो।

ऐसे करते-करते ययाति को हज़ार साल मिल गए, हज़ार साल बाद मौत आई तो ययाति फिर रोने लगा, तो मौत ने कहा- अब तो समझो। तुम जिन वासनाओं को पूरा करना चाहते हो, वो किसी की कभी पूरी नहीं होती। तुम्हारी समझ में कब आएगा? तुम बूढ़े होकर भी बचकाने ही बने हुए हो। जिसे तुम पूरा करने चले हो, वह पूरा होता ही नहीं, अधूरा रहना ही उनका स्वभाव है।

ययाति को समझ आई, उसने पुरु की जवानी वापस दिला दी और उसको राजपाट देकर मौत के साथ चल दिये। कालांतर में इसी पुरु के नाम से कुरुवंश चला जिसमें कौरव-पांडव हुए। दुर्योधन ने अपने पूर्वज ययाति से कुछ नहीं सीखा। पांडवों का राज्य हड़प कर सोचा कि अनन्त काल तक इसका उपभोग करूँगा। मौत उसको भी लेने आई।

हम भी ययाति, दुर्योधन से सीख पाते हैं क्या? पुरु से ही सीख लें.....

राकेश कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सती अनुसुइया



सती अनुसुइया की कथा गहरे अर्थ देती है। कथा कहती है कि देवर्षि नारद से अनुसुइया के सतीत्व की कथा सुन कर त्रिदेवियों को उनसे डाह होने लगा और उन्होंने त्रिदेव को विवश कर दिया कि वे जा कर अनुसुइया की परीक्षा लें। पर क्या त्रिदेवियों के अंदर भी अहंकार आ सकता है? जो जगत की सबसे बड़ी नियामक शक्तियां हैं, जो स्वयं में सृजन, पालन और संहार की सम्पूर्ण व्यवस्था हैं, उनमें डाह जैसा छुद्र भाव आएगा?

नहीं, वस्तुतः यह डाह नहीं था। अनुसुइया की निष्ठा का सर्वश्रेष्ठ होना स्वीकार करने से पूर्व उपजा प्रकृतिसम्मत संदेह था, जो सहज होने के साथ आवश्यक भी था। किसी भी व्यक्ति को संसार में सर्वश्रेष्ठ यूँ ही तो नहीं माना जा सकता न? आखिर श्रेष्ठ, कम श्रेष्ठ, अश्रेष्ठ में भेद कैसे हो? जीवन की कोई उपलब्धि बिना कठिन परीक्षा के नहीं मिलती। उपलब्धि जितनी बड़ी हो, परीक्षा भी उतनी ही कड़ी होती है। त्रिदेवियों की जिद्द के पीछे परीक्षा का विधान था, न कि द्वेष!

त्रिदेव जानते थे अनुसुइया के सत्य को, उनके सतीत्व को... फिर भी अपनी पत्नियों के जिद्द पर उनकी परीक्षा लेने पहुँच गए! क्यों? वस्तुतः यह गृहस्थ धर्म के प्रति समर्पण का श्रेष्ठ उदाहरण है। अपने जीवनसंगी की अनावश्यक इच्छा भी अवश्य पूरी कर देनी चाहिये, यदि वह किसी को दुख न पहुँचा रही हो...

अब माता अनुसुइया को देखिये! वह तात्कालिक समय के सबसे ज्ञानवान कुल की पुत्री हैं और एक प्रतिष्ठित विद्वान ऋषि की पत्नी हैं। उनके स्वयं के ज्ञान का प्रकाश भी समस्त संसार में फैला है! और उनसे त्रिदेव आ कर प्रश्न रख देते हैं कि तुम्हारे यहाँ भोजन तभी करेंगे जब तुम वस्त्रमुक्त हो कर भोजन परोसो। कितना कठिन है न यह पहेली सुलझाना?

पर यहीं माता अनुसुइया की विद्वता और तार्किकता दिखती है। वे अपनी परीक्षा लेने आये त्रिदेव को ही परीक्षा देने पर विवश करती हुई कहती हैं कि " मुझे ज्ञात है कि आप मेरे सतीत्व को, अपने को... अब मैं कुछ प्रतिष्ठा आप सिद्ध संगी के प्रति मेरी निष्ठा अटूट है तो आप बालक रूप धारण कर मेरे पुत्र बनें। आप इससे बच ही नहीं सकते, जो सत्य है उसे असत्य नहीं बता सकते, और सत्य का प्रमाण देने के लिए आपको बालक बनना ही पड़ेगा।"



जितना मैंने पढ़ा है उसमें भक्त के सामने भगवान के इस तरह विवश होने का दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। यह सती अनुसुइया की विद्वता की विजय थी, उनकी तर्कशक्ति की जीत थी। त्रिदेव कैसे बालक रूप में आते?

त्रिदेव माता अनुसुइया को पुत्र रूप में मिले और उनकी परीक्षा लेने का विधान रचने वाली त्रिदेवियाँ स्वतः उनकी पुत्रवधु हो गईं। और उनकी इसी उपलब्धि के कारण उन्हें पूज्य पद प्राप्त हुआ।

यदि आपमें धर्म का भाव है, निरन्तर ज्ञान अर्जित करते रहने की ललक है, अपनी परम्पराओं और सम्बन्धों के प्रति अटूट निष्ठा है, तर्क की शक्ति है और अपने लिए लड़ सकने का साहस भी है, तो ईश्वर आपकी गोद में भी खेलने आ जाते हैं।

वंदना, प्रवर श्रेणी लिपिक

दो सहेलियां....

गाँव में दो सहेलियाँ 12 वीं की परीक्षा देने जा रही हैं और आपस में बातें कर रही हैं।

शामली : गामली, तू तो बिल्कुल भी पढ़ाई नहीं करती है। पास कैसे होगी ?

गामली : अरे छोड़ न यार! पास हो गई तो फिर 13, 14, 15वीं की परीक्षा दो और फिर मिलेगा वही नौकरी वाला पति।

शामली : तो? बढ़िया तो है।

गामली : क्या बढ़िया है ? 10 घंटों की नौकरी और तनख्वाह 25-30 हजार। फिर गुडगांव, बेंगलोर, मुंबई, पूना जैसे बड़े शहरों में रहने जाओ। वहाँ किराए का घर होगा जिसमें आधी तनख्वाह चली जाएगी। खुद का घर चाहिए तो लोन लेकर 10-15 मंजिल ऊपर घर लो और एक गुफा जैसे बंद घर में रहो। लोन चुकाने में 15-20 साल लगेंगे, न त्यौहारों में छुट्टी न गर्मी में। सदा बीमारी का घर। स्वस्थ रहना हो तो ऑर्गेनिक के नाम पर 3-4 गुना कीमत देकर सामान खरीदो सो अलग। और बाकी तू सारा जोड़, घटा, गुणा, भाग कर ले, तेरी समझ में खुद आ जाएगा।

दूसरी तरफ, अगर मैं परीक्षा में फेल हो गई तो पिता किसी अच्छी खेती वाले किसान से ब्याह कर देंगे। पैसे कम ज्यादा तो होंगे, लेकिन सारे अपने होंगे, कोई टैक्स का लफड़ा नहीं, मुफ्त का बिजली पानी और डीजल सारा कुछ ऑर्गेनिक उपजाएँगे, खुद की भैंस का दूध पीएँगे। बीमारी की कोई चिंता ही नहीं और बड़ी बात कि सास, ससुर, पति, बच्चे 24 घंटे साथ रहेंगे।

और सबसे बड़ी बात. सारी सरकारें हमारे वोटों के चक्कर में हर चुनाव से पहले हमारा छक के लिया सारा लोन माफ कर देंगी, और उस लोन को चुकायेगा कौन ? 'वही नौकरी वाला तुम्हारा पति (समाज का बैल) ।

शामली : तूने तो मेरी आंखें ही खोल दीं यार!! सोचती हूँ, मैं भी फेल ही हो जाऊँ।

सागर, प्रवर श्रेणी लिपिक

हंसगुल्ले

हंसने से हमारे घर में खुशहाली रहती है और हम तरोताजा महसूस करते हैं। अच्छे खान-पान के साथ ही सेहतमंद रहने के लिए हंसी भी जरूरी है। हमें सेहतमंद रखने में हंसी बड़ी भूमिका निभाती है। इसलिए हम सभी को हर दिन नियमित रूप से हंसना चाहिए। अगर हम सुबह-शाम हंसने की आदत डाल लेते हैं, तो कोई भी बीमारी, चाहे मानसिक हो या शारीरिक हमारे पास भी नहीं आएगी। तो चलिए शुरू करते हैं हंसने-हंसाने का ये सिलसिला...

टीटी ने चिटू को प्लेटफॉर्म पर पकड़ लिया,
टीटी- टिकट दिखा,
चिटू- अरे मैं ट्रेन में आया ही नहीं,
टीटी- क्या सबूत है?
चिटू- सबूत यही है कि मेरे पास टिकट नहीं है।



यात्री ट्रेन से उतरा, उसने पप्पू से पूछा- ये कौन सा स्टेशन है?
पप्पू हंसा और जोर से हंसा...
जोर-जोर से हंसते-हंसते लोटपोट हो गया...
फिर बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभालते हुए बोला-
पगले, ये रेलवे स्टेशन है...!!

पत्नी- सुनो जी, आपके जन्मदिन के लिए
बहुत अच्छे कपड़े ले लिए हैं...!!
पति (खुश होते हुए)- वाह...क्या बात है, लाओ दिखाओ...
पत्नी- हां, अभी पहनकर आती हूं...!!

रवि कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक





कम अंशदान में
मिलेगा वही लाभ,
ESI योजना से जुड़ें आज

ESI योजना से जुड़ना अब पहले से हुआ ज़्यादा फ़ायदेमंद

- नियोक्ताओं के लिए अंशदान दर 4.75 से घटाकर 3.25 प्रतिशत और कर्मचारियों के लिए 1.75 से घटाकर 0.75 प्रतिशत किया गया
- घटाए गए अंशदान से कर्मचारियों एवं नियोक्ताओं के वित्तीय भार में कमी
- ESI योजना के अंतर्गत मिलने वाले हितलाभ वही रहेंगे एवं उनमें कोई कमी नहीं होगी

ESI योजना के मुख्य हितलाभ

- चिकित्सा हितलाभ • बीमारी हितलाभ • मातृत्व हितलाभ • निःशक्तता हितलाभ
- आश्रितजन हितलाभ • बेरोज़गारी भत्ता

ESI Act संगठित क्षेत्र के कारखानों/संस्थाओं जहां 10 या इससे अधिक व्यक्ति कार्यरत हों, पर लागू होता है। प्रतिमाह ₹21,000/- तक वेतन पाने वाले कर्मचारी ESI योजना के हितलाभों के पात्र हैं।

टोल फ्री नंबर : 1800 11 2526
मेडिकल हेल्पलाइन नंबर : 1800 11 3839



श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment
Government of India
Website: www.labour.gov.in
T: www.facebook.com/labourministry @labourministry



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Website: www.esic.in, www.esic.nic.in, www.esichospitals.gov.in
T: www.facebook.com/esichq @esichq